

ॐ

वर्ष-11, अंक-17, 1-15 सितम्बर, 2026 (पाक्षिक)

चाणक्य वार्ता

राजभाषा हिन्दी की संपूर्ण अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

ISSN 2456-1207

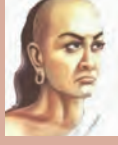
मूल्य : 15 रुपये

कुल पृष्ठ 44



श्री भागवत का विराट व्यक्तित्व
विश्व को दिया नया विमर्श
और दूरगामी संदेश

देशभक्त और अनुशासित सेना जिस राष्ट्र की ढाल हो, उसकी तरफ कोई दुश्मन आंख नहीं उठा सकता-आचार्य चाणक्य



चाणक्य वार्ता

सम्पूर्ण अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

वर्ष : 11, अंक : 17, 1-15 सितम्बर, 2026



अनुक्रम

05 सम्पादक के नाम पत्र

06 सम्पादक की कलम से

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय

07 नेपाल में वाटर 'बम' तबाही... तबाही.. तबाही... : आर.पी. तोमर

12 नागपुर से न्यूयॉर्क तक संघ-विविधता में एकता भारत के डीएनए में : धीरेन्द्र मिश्र

17 हमारी एकता और एकात्मता ही विश्व बंधुता का आधार: डॉ. भरत कुमार

21 नबीन की नई टीम : नई ऊर्जा, नया संतुलन, लक्ष्य 2029 : अभिनव तोमर

राज्यों से

23 उत्तर प्रदेश-दंगाई मिले मिट्टी में, राज्य में सब चंगा, नो दंगा : हेमन्त उपाध्याय

27 दिल्ली-समाज को जोड़कर रखता है धर्म-डॉ. कृष्ण गोपाल : मृत्युंजय कुमार झा



नई दिल्ली कार्यालय

मुख्यालय :

'सन्निधि', ए-28, मनसारापार्क, उत्तम नगर,

नई दिल्ली-110059

कॉरपोरेट कार्यालय :

321, तृतीय तल, वर्धमान मॉल, प्लॉट-2,

सेक्टर-19, द्वारका, नई दिल्ली-110077

सम्पर्क : 011-43305078

ई-मेल : chanakyavarta@gmail.com

उत्तर क्षेत्र कार्यालय

252, खिल्ला कॉलोनी, कालका

पंचकुला, हरियाणा-133302

सम्पर्क : 09466988764

पूर्वोत्तर क्षेत्र कार्यालय

116, कॉमर्स हाउस, एम.जी. रोड, फैंसी बाजार

निकट ऐक्सिस बैंक, गुवाहाटी, असम-781001

सम्पर्क : 09101834214, 9864337619

दक्षिण क्षेत्र कार्यालय

13, नल्लन्ना मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट,

चेन्नई-600 079

सम्पर्क : 9342302248, 9941245660

संरक्षक

डॉ. योगेन्द्र नारायण (पूर्व महासचिव, राज्यसभा)

कुलाधिपति, गढ़वाल विश्वविद्यालय

लक्ष्मीनारायण भाला (वरिष्ठ साहित्यकार)

परामर्श मंडल

वेणुगोपालन (वरिष्ठ पत्रकार)

सम्पादक मंडल

सम्पादक : डॉ. अमित जैन

कार्यकारी सम्पादक : आर.पी. तोमर

(मो. 9457714100)

संस्थापक राष्ट्रीय समन्वयक

पद्मश्री डॉ. (स्व.) श्यामसिंह शशि

(कुलाधिपति, रोमा विश्वविद्यालय)

स्व. घनराज भास्वी

(वरिष्ठ पत्रकार-रक्षा सेनाएँ एवं अर्द्ध सैनिक बल)

दिलीप बैनर्जी, कोलकता

आर्थिक सलाहकार मंडल

सी.ए. मन्नेश्वर कर्ण

सी.ए. स्वीटी जैन

अन्तरराष्ट्रीय सलाहकार मंडल

अभिषेक त्रिपाठी, आयरलैंड

कैलाश कंदोई, सिलीगुड़ी

(प्रभारी-पश्चिम बंगाल)

विधि सलाहकार मंडल

अंकुर जैन (अधिवक्ता, सुप्रीम कोर्ट)

योगेश कुमार (चेयरमैन, नैचर व्यू)

अजय नागर (स्वतंत्र पत्रकार)

राज्य प्रभारी

उत्तर क्षेत्र प्रभारी- विशाल शर्मा, चंडीगढ़

पूर्वोत्तर क्षेत्र प्रभारी- राजीव अगस्ती, गुवाहाटी

दक्षिण क्षेत्र प्रभारी- नवरतन पींचा जैन, चेन्नई

पश्चिम क्षेत्र प्रभारी- आशा सिंह देवारी, मुंबई

तमिलनाडु प्रभारी- जे.पी. ललवानी, चेन्नई

उत्तर प्रदेश प्रभारी- इंदुभाल त्रिपाठी, प्रयागराज

पश्चिम उ.प्र. प्रभारी- अंकित जैन, मेरठ



- 28 हरियाणा-विकसित भारत-विकसित हरियाणा के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा हरियाणा: विशाल शर्मा
- 29 पश्चिम बंगाल-बंगाल में 'शुभ' बदल रही उद्योगों की तस्वीर, निवेशकों का आगमन : कैलाश कंदोई
- 31 महाराष्ट्र-णमोकार तीर्थ में मनायी गयी आचार्य श्री देवनंदी महाराज की 63वीं जन्म जयंती, चाणक्य वार्ता का विमोचन

श्रद्धांजलि

- 35 समाजसेवी श्री चक्रेश जैन, दिल्ली
- 38 बाल साहित्यकार श्री गोविंद शर्मा, राजस्थान

चिंतन

- 36 आचार्य चाणक्य ने बताया पुनर्जन्म का महत्व : रमेश चन्द्र जैन

समाचार जगत

- 32 चाणक्य वार्ता पाक्षिकनामा
- 34 खबरों में देश-विदेश : सोनम जैन
- 35 उत्तर भारत की खबरें : विशाल शर्मा/लवकुश
- 36 पूर्वोत्तर भारत की खबरें : राजीव अगस्ती/डॉ. आलोक सिंह
- 37 दक्षिण भारत की खबरें : वेद प्रकाश पांडेय/ ईश्वर करुण
- 38 पश्चिम भारत की खबरें : आशा सिंह देवासी/धीरेन बरोट

जॉब अलर्ट

- 39 सरकारी नौकरियों में अवसर : सी.ए. स्वीटी जैन



देश भर में 'चाणक्य वार्ता' के प्रतिनिधि

राज्य ब्यूरो चीफ

धीरेन्द्र मिश्र, नई दिल्ली
डॉ. अमर सिंहल, जयपुर, राजस्थान
लवकुश, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
अजय भट्ट, देहरादून, उत्तराखंड
डॉ. गुलाब सिंह, यमुना नगर, हरियाणा
शरद छिब्वर, चंडीगढ़
रमेश गुप्ता, उधमपुर, जम्मू-कश्मीर
गुरुवचन सिंह, शिमला, हिमाचल प्रदेश
सतीश दास, गुवाहाटी, असम
डॉ. आलोक सिंह, शिलांग, मेघालय
रतन सूत्रधार, अगरतला, त्रिपुरा
तुबन राँबा 'लीली', ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश
हुरुई जेलियांग, दीमापुर, नागालैंड
ए. रणजीत, आईजोल, मिजोरम
किरन कुमार, इफाल, मणिपुर
डॉ. टी.बी. छेत्री, गंगटोक, सिक्किम
वेद प्रकाश पाण्डेय, बंगलुरु, कर्नाटक
ईश्वर करुण, चेन्नई, तमिलनाडु
जी. गौरीशंकर, हैदराबाद, तेलंगाना
उमा महेश्वर रेड्डी, विजयवाड़ा, आंध्रप्रदेश

श्रीकांत कण्णन, पुडुचेरी
अरुण लक्ष्मण, तिरुवनंतपुरम, केरल
किशोर आपटे, मुंबई, महाराष्ट्र
विनोद कुशवाहा, भोपाल, म.प्र.
सियानंद मंडल, पटना, बिहार
गौतम चौधरी, राँची, झारखंड
प्रफुल्ल कुमार दाश, भुवनेश्वर, ओडिशा
अशोक नंदी, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
राजेन्द्रपाल शर्मा, पोर्टब्लेयर, अंडमान निकोबार

नेशनल सोशल मीडिया हेड
हेमन्त उपाध्याय, जयपुर

नेशनल मार्केटिंग हेड
धीरेन बरोट, अहमदाबाद

जिला ब्यूरो चीफ
अविनाश पाठक, नागपुर, महाराष्ट्र
अनमोल जैन, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश
सुनीता गोस्वामी, मथुरा, उत्तर प्रदेश
डॉ. डी.के. अस्थाना, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश
सोनम जैन, दिल्ली
डॉ. ललमुआनओमा साइलो, आईजोल, मिजोरम

नोट : देश के कोने-कोने में आप अपने समाचार पत्र हॉकर के माध्यम से घर बैठे 'चाणक्य वार्ता' पत्रिका माँगा सकते हैं। यदि आपको पत्रिका मिलने में कठिनाई होती है, तो आप 'चाणक्य वार्ता' के मुख्य प्रसार कार्यालय, नई दिल्ली में 011-43305078 पर संपर्क कर सकते हैं अथवा chanakyavarta@gmail.com पर ई-मेल भी कर सकते हैं।

प्रसार प्रबंधक

© सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से 'चाणक्य वार्ता' पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय रहेंगे।

इंटरनेशनल दिव्य परिवार सोसाइटी, नई दिल्ली का पाक्षिक प्रकाशन

चाणक्य वार्ता मीडिया प्रा. लि. का उपक्रम

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अमित जैन के लिए विकास कम्प्यूटर एंड प्रिंटर्स, ट्रोनिगा सिटी, लोनी, गाजियाबाद से मुद्रित एवं ए-28, मनसाराम पार्क, नई दिल्ली से प्रकाशित।

सम्पादक : अमित जैन।

आवरण व लेआउट : स्वपन कम्प्यूनिकेशन, दिल्ली

वेबसाइट : www.chanakyavarta.com

चाणक्य वार्ता के 16 से 31 अगस्त 2026 के अंक में संपादक डॉ अमित जैन द्वारा लिखित 'भारतीय संसद को अखाड़ा बनाने से रोकना होगा' संपादकीय पढ़ा। इसमें संसद में हुई नाटकबाजी पर विस्तार से रोशनी डालते हुए दोनों पक्ष दिए गए हैं। लिखा गया है कि 7 हजार मिनट खराब हुए और जनता के 175 करोड़ रुपये बिना किसी काम के खर्च हुए। यह दुर्भाग्य की बात है कि देश की इतनी बड़ी राशि का दुरुपयोग हुआ जबकि हासिल कुछ नहीं हुआ। मेरा अपना विचार है कि संसद की कार्यवाही पर खर्च हुए 175 करोड़ रुपये उन सांसदों से वसूले जाए, जिनकी वजह से ऐसा हुआ है। अगर गृहमंत्री को सुनना नहीं था तो उन्हें सदन में बुलाने की मांग करते हुए सदन ठप क्यों की गई? लेख में सभी पहलुओं को छुआ गया है।

बिंदेश्वरी दुबे
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

चाणक्य वार्ता का 16 अगस्त 2026 का अंक पढ़ा। जिसमें लेखक श्याम जाजू ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा लालकिले की प्राचीर से देश को दिये गये संदेश कि 'भारत को मेक इन इंडिया से ग्लोबल इंडिया बनाना है' का सुंदर विश्लेषण किया है। वास्तव में प्रधानमंत्री देश के सच्चे सपूत हैं। वे भारत को विश्व शक्ति बनाना चाहते हैं। 2047 तक भारत को विश्व की तीसरी आर्थिक शक्ति बनाने का लक्ष्य उन्होंने रखा है। इस लेख के लेखक ने विस्तार से बताया है कि किस तरह से देश मेक इन इंडिया से ग्लोबल इंडिया बन सकता है। एक अच्छे व पठनीय और मार्गदर्शनीय लेख लिखने के लिए श्याम जाजू जी को साधुवाद एवं इस तरह के प्रेरित लेख प्रकाशित करने के लिए पत्रिका के संपादक मंडल का आभार।

केलाश कंदोई
सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल

चाणक्य वार्ता के 16 अगस्त 2026 के अंक में '79 वर्षों में स्वाभिमान की नई ऊंचाइयों पर भारत' नामक लेख पढ़ा। जिसमें लेखिका श्वेता गोयल ने राष्ट्र

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखों पर अपने विचार या कोई सुझाव हमें हमारी ई-मेल response50123@gmail.com पर भेज सकते हैं। स्थान की उपलब्धता के अनुसार हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।
—सम्पादक 'चाणक्य वार्ता'



निर्माण की दिशा में उठाये गए कदमों का उल्लेख किया है। उन्होंने अपने इस लेख में विभिन्न क्षेत्रों में हुए स्वाभिमानी कार्यों का उल्लेख किया है। लेख में उन्होंने खोजपूर्ण जानकारी भी साझा की है, उसके लिए उन्हें बधाई एवं हृदय की गहराइयों से आभार। लेख में कई ऐसी जानकारी भी दी गई है, जिनकी जानकारी बहुत लोगों को नहीं थी। उनके इस प्रेरणादायी लेख से युवा वर्ग वास्तव में बहुत कुछ सीखेगा। इसके लिए लेखिका को साधुवाद।

दीपक कुमार अग्निहोत्री
सागरपुर, दिल्ली

अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रिका 'चाणक्य वार्ता' का 16 अगस्त 2026 का अंक मिला। पत्रिका में कार्यकारी संपादक आर. पी. तोमर जी ने 'प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत' नामक शीर्षक से लेख लिखा है। जिसमें 80वें स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री के संबोधन को विस्तार से दिया गया है। लेखक का यह कहना बिल्कुल सही है कि आजादी के 79 वर्षों में देश ने बहुत कुछ हासिल किया है। लेकिन नए भारत के संकल्प के साथ नरेन्द्र मोदी जिस तरह से आगे बढ़ रहे हैं, वह अनुकरणीय है। उन्होंने अपने 12 वर्षों के कार्यकाल में भारत को ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया है। आज भारत अनेक क्षेत्रों में अन्य देशों की चाकरी नहीं करता है। यानी कि आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार असंभव को संभव करके दिखा रही है। मैं प्रधानमंत्री की देशभक्ति और संकल्पों की सराहना करते हुए उनके दीर्घायु व स्वस्थ रहने की कामना करता हूँ।

आचार्य विनोदेश्वर कुट्टी
तिरुवंतपुरम, केरल

चाणक्य वार्ता के 16 से 31 अगस्त 2026 के अंक में सरिता सुराणा द्वारा लिखित 'राष्ट्रमंडल खेलों में चुनौतियों के बीच चमका भारत' लेख पढ़ा। लेखिका के लेख हमने पूर्व में भी पढ़े हैं। यह लेख पढ़कर गर्व से सीना चौड़ा हो गया। इस लेख में उन्होंने बताया कि किस तरह से चुनौती पूर्ण समय में भारतीय खिलाड़ियों ने चुनौती स्वीकार की और देश को मैडल रूपी सम्मान दिलाया। इसके लिए खिलाड़ियों को भी बहुत-बहुत बधाई। साथ ही युवा वर्ग के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी सरिता सुराणा का भी आभार। पत्रिका चाणक्य वार्ता और संपादक मंडल का बारम्बार धन्यवाद। उम्मीद है कि खेल संबंधी लेखों को ख्याति प्राप्त पत्रिका चाणक्य वार्ता में इसी तरह से स्थान दिया जाता रहेगा।

वैभव शर्मा
कोलकाता, पश्चिम बंगाल

मैं पिछले 8 वर्षों से 'चाणक्य वार्ता' का हर अंक पढ़ता हूँ। क्योंकि इस अंतरराष्ट्रीय पत्रिका के हर अंकों में नवीन जानकारी होती है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक के अलावा देश विदेश की महत्वपूर्ण खबरों का समावेश पत्रिका को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करता है। इसी के साथ अर्थ जगत से जुड़े लोगों को काफी लाभ मिल जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि यह सम्पूर्ण पत्रिका है। मैं देश के किसी भी कोने में गया मुझे पत्रिका वही उपलब्ध हो गई। इससे भी बड़ी बात यह है कि पत्रिका ने अपने स्तर को बनाये रखा है। इसकी गुणवत्ता से संपादक मंडल ने कभी कोई समझौता नहीं किया है।

मोहिनी निशा धरन
कोयम्बटूर, तमिलनाडु

श्री भागवत का विराट व्यक्तित्व: विश्व को दिया नया विमर्श और दूरगामी संदेश



राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष में संघ प्रमुख डॉ मोहन राव भागवत के विराट व्यक्तित्व और विद्वत्ता के दर्शन जहां भारत के कोने-कोने में हुए वहीं विश्व के प्रमुख देशों ने उनके अगस्त-सितंबर 2026 के अमेरिका, कनाडा और ब्रिटेन के 17 दिवसीय कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा को नजदीक से जानने का अवसर प्राप्त किया। संघ के शताब्दी वर्ष में सरसंघचालक जी की तीन देशों की यात्रा न केवल संघ के इतिहास में बल्कि वैश्विक भू-राजनीति और सांस्कृतिक विमर्श में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई है। उनके अंतरराष्ट्रीय दौरे के कई दूरगामी और बहुआयामी परिणाम देखने को मिल रहे हैं, जिन्हें सकारात्मक संभावनाओं और अंतरराष्ट्रीय चुनौतियों दोनों चशमों से देखा जा सकता है। इसे वैश्विक पटल पर 'संघ का नया विमर्श और दूरगामी संदेश' भी कहा जा सकता है।

श्री भागवत का यह दौरा केवल प्रवासी भारतीयों से मिलने का सामान्य उपक्रम नहीं है, बल्कि यह संघ की शताब्दी यात्रा का एक ऐसा मील का पत्थर है जिसके दूरगामी परिणाम भविष्य के सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र को भी प्रभावित करेंगे।

न्यूयॉर्क के 'वन वर्ल्ड वन ह्यूमैनिटी' कार्यक्रम में बुद्धिजीवियों की भारी भीड़ के बीच सरसंघचालक डॉ मोहन राव भागवत ने स्पष्ट कहा कि 'अगर कोई हिन्दू यह सोचता है कि भारत में मुस्लिम नहीं होने चाहिए, तो वह हिन्दू नहीं हो सकता'। उनके इस विचार से वैश्विक मंच पर संघ की छवि का उदार और समावेशी संदेश

सामने आया है। श्री भागवत के विराट व्यक्तित्व के सामने अंतरराष्ट्रीय मीडिया में संघ को लेकर बनी 'कट्टरपंथी' छवि और भ्रांतियों का स्वयं निवारण हो गया है। विश्व के बुद्धिजीवियों ने नजदीक से समझा है कि संघ सांस्कृतिक, सेवाभावी और सार्वभौमिक एकता (वसुधैव कुटुम्बकम्) का समर्थन करने वाला एक विशाल संगठन है और इसके प्रमुख श्री भागवत भी विश्व बंधुत्व की भावना से ओत-प्रोत है।

डॉ. भागवत का प्रवासियों को दिया गया यह संदेश कि वे जिस देश में रह रहे हैं, उसके प्रति वफादार रहें और वहां के नागरिक दायित्वों को पहले निभाएं क्योंकि उनकी मातृभूमि उनसे इसी उच्च चरित्र की अपेक्षा करती है। इस संदेश के बाद निश्चित रूप से संघ का कद प्रवासी भारतीयों की नज़रों और विश्व के बुद्धिजीवियों के समक्ष बहुत ऊंचा हुआ है। क्योंकि यह संदेश पश्चिमी देशों में प्रवासियों पर लगने वाले 'दोहरी वफादारी' के आरोपों को खारिज करता है। प्रवासी भारतीयों पर 'जन्मभूमि बनाम कर्मभूमि' के इस पाठ का गहरा प्रभाव पड़ा है।

मैडिसन स्क्वायर गार्डन जैसे बड़े मंचों पर रक्षाबंधन और वैश्विक सौहार्दपूर्ण कार्यक्रमों के जरिए युवा पीढ़ी को भारतीय जड़ों और सनातन मूल्यों से जोड़ने का श्री भागवत का प्रयास सार्थक नजर आता है। उन्होंने सांस्कृतिक जुड़ाव का महामंत्र भी इस मंच से दिया, क्योंकि भारत के महाशक्ति बनने से आज की महाशक्ति बेचैन हो गयी थी इसलिए 'विश्वगुरु' बनाम 'महाशक्ति' को नई वैचारिक दिशा देते हुए श्री भागवत ने कनाडा के टोरंटो में

'हिंदू विश्व बंधु' कार्यक्रम के दौरान भारत को 'महाशक्ति' न कहकर 'विश्वगुरु' के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने संदेश दिया कि भारत का लक्ष्य सैन्य या आर्थिक ताकत से दुनिया को जीतना नहीं, बल्कि अपनी विविधता और संस्कृति से दुनिया को राह दिखाना और सबकी मदद करना है।

अंतरिक्ष विज्ञान से लेकर क्वांटम कम्प्यूटिंग तक पर प्रवासियों के साथ हुई गोलमेज बैठके दर्शाती हैं कि संघ अब खुद को केवल सांस्कृतिक संगठन तक सीमित न रखकर भारतीय प्रतिभाओं के वैश्विक संजाल को राष्ट्र निर्माण से जोड़ने की दीर्घकालिक योजना पर कार्य कर रहा है। यद्यपि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ीं चुनौतियां और ध्रुवीकरण रूपी इस यात्रा के दूरगामी परिणाम केवल संघ के पक्ष में ही नहीं रहे, बल्कि इसने वैश्विक स्तर पर संघ के विरोधियों को मिर्ची भी लगा दी है जिससे लगता है कि आने वाले समय में वैश्विक स्तर पर संघ के नेताओं की विदेश यात्राओं पर बारीक नजर भी रखी जाएगी। वहीं विदेशों में दिए गए संघ प्रमुख के उदारवादी बयानों का असर भारत की घरेलू राजनीति पर भी पड़ेगा।

वैसे तो संघ की स्थापना ही राष्ट्र भक्ति और चरित्र निर्माण के लिए हुई थी लेकिन सरसंघचालक के रूप में डॉ. मोहन राव भागवत ने अपने विराट व्यक्तित्व और विद्वत्ता के बल पर नये इतिहास का निर्माण किया है। संघ प्रमुख ने नागपुर में कहा था कि संघ के चरित्र निर्माण के मॉडल ने दुनिया भर में दिलचस्पी पैदा की है। भारत और पांचों महाद्वीपों से लोग यह पूछने आ रहे हैं कि क्या संघ कार्यकर्ता उन्हें ट्रेनिंग दे सकते हैं। वे अपने देशों में युवाओं को इसी तरह की मूल्यों पर आधारित ट्रेनिंग देना चाहते हैं। उन्होंने कहा था कि यह सफर अभी जारी है। अभी बहुत दूर जाना है। सम्भवतः उनकी तीन देशों की यह यात्रा उसी कड़ी का एक प्रमुख हिस्सा है।

—डॉ अमित जैन



नेपाल में वाटर 'बम' तबाही... तबाही.. तबाही...

पानी बना काल, तबाह हुआ नेपाल : भारत की बगल में भी 'वाटर बम'

आर.पी. तोमर



नेपाल और तिब्बत सीमा पर आई विनाशकारी डिजिटल बाढ़ और भूस्खलन ने वास्तव में पूरे विश्व को झकझोर कर रख दिया है। इस

भीषण प्राकृतिक आपदा में देश-विदेश के हजारों लोगों की मौत हो चुकी है और कई हजार लोग लापता हैं, जिनमें भारतीयों सहित 32 देशों के पर्यटक शामिल हैं। इस तबाही के दृश्य और लोगों के खोने का दर्द सचमुच बेहद मार्मिक और हृदयविदारक है। गांव के गांव, पुल, बड़े बुनियादी ढांचे, हाईड्रोपावर ताश के पत्तों की तरह से बह गए हैं, प्रभावित क्षेत्रों में चारों ओर मलबा, कीचड़ और विनाशलीला ही दिखाई दे रही है, कीचड़ व मलवे में लाशें व जीवित लोग पड़े हैं, सुरंगों में इंसान फंसे हैं, मुर्दाघरों में शव रखने की जगह नहीं है, शव बेपहचान होकर सड़ रहे हैं। लोग अपनों की तलाश में भटक रहे हैं। अरबों खरबों की संपत्ति वाटर बम की भेंट चढ़ गई है। हंसते-खेलते परिवार मिट्टी बन गए हैं। भीषण बाढ़ से

नेपाल का संबंध बाकी दुनिया के कई क्षेत्रों से कट गया है।

वैज्ञानिकों, यूएसजीएस और कनाडा की केलगिरी यूनिवर्सिटी के प्रो. डेनियल शुगर के अनुसार यह महाविनाश तब हुआ जब हिमालय की लांगटांग लिरुंग चोटी के पास आधा किलोमीटर लंबा और 800 मीटर चौड़ा विशाल ग्लेशियर का हिस्सा 5 हजार मीटर से भी अधिक ऊपर से टूटकर नीचे गिरा। इसके मलबे, बर्फ और चट्टानों के गिरने से नदियों में एक कृत्रिम बांध बन गया, जिसके अचानक फटने से 'लिव्किड कंक्रीट' (कीचड़ और पत्थरों का गाढ़ा मिश्रण) जैसा सैलाब 'सुनामी' की रफ्तार से बस्तियों को लील गया।

भोटेकोशी और त्रिशूली नदी घाटी में मलबे के जमा होने से एक नई अस्थायी झील बन गई है, जिसके ओवरफ्लो होने से बाढ़ का खतरा अभी भी कम नहीं हुआ।

उधर यह भी माना जा रहा है कि चीन ने जिस तरह से कोरोना वायरस से दुनिया को बेखबर रखकर तबाही मचाई थी, उसी तरह से नेपाल से 45 मिनट पहले तिब्बत में बाढ़ आई थी, जिसका पता चीन को लग गया था लेकिन चीन ने नेपाल को

अली सूचना नहीं दी। 45 मिनट बाद जब सूचना दी गई तब तबाही सिर पर आ चुकी थी। अगर समय रहते सूचना मिल जाती तो तबाही को कम किया जा सकता था। इसलिए कहा जा रहा है कि चीन ने नेपाल पर वाटर बम का वार किया है। साथ ही भारत के लिए भी दुनिया का सबसे बड़ा बांध ब्रह्मपुत्र नदी पर बनाकर 'वाटर बम' तैयार किया जा रहा है। यद्यपि चीन कह रहा है कि नेपाल में वाटर बम के पीछे उसकी कोई भूमिका नहीं है।

चीनी वैज्ञानिक कांग शिचांग के अनुसार ग्लेशियर टूटने की यह घटना लगभग 5140 मीटर की ऊंचाई पर हुई, जिसने करीब 6,20,000 वर्ग मीटर के क्षेत्र को अपनी चपेट में केवल 7 मिनट में ही ले लिया। बर्फ, चट्टान और मलबे का यह विनाशकारी बहाव 50 मीटर प्रति सेकंड की रफ्तार से 20 किलोमीटर नीचे की तरफ बहा। हजारों मीटर की ऊंचाई से गिरते हुए यह कीचड़ सैलाब देखते ही देखते गियरोंग पोर्ट तक सब कुछ खत्म करता चला गया। ग्लेशियर और चट्टानों के मलबे से नदी का प्रवाह रुक जाने के कारण गियरोंग पोर्ट के ऊपरी भाग में एक अस्थिर